



शहरी क्षेत्रों में टड्डियों का आगमन

प्रीलमिस के लिये:

टड्डि, टड्डि चेटावनी संगठन

मेन्स के लिये:

शहरी क्षेत्रों में टड्डियों के आगमन से संबंधित मुद्दे

चर्चा में क्यों?

फसलों को बुरी तरह प्रभावित करने वाली टड्डियों का पछिले कुछ दिनों से राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र (वदिर्भ क्षेत्र) के शहरी क्षेत्रों में देखा जाना चिंता का विषय है।

प्रमुख बडि:

- शहरी क्षेत्रों में टड्डियों का आगमन:
- दरअसल 11 अप्रैल को भारत-पाकसिंतान सीमा के आस-पास के क्षेत्रों में टड्डियों को पहली बार देखा गया था।
- मई के शुरुआती दिनों में ही पाकसिंतान से होते हुए टड्डियों का आगमन राजस्थान की तरफ होने लगा था।
- मानसून से पहले आगमन होने की वजह से इनके मार्गों में सूखाग्रस्त क्षेत्र जहाँ भोजन व आश्रय न मिलने के कारण ये टड्डियाँ हरी वनस्पति की तलाश में राजस्थान की तरफ बढ़ती गईं।
- [संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन \(Food and Agriculture Organisation-FAO\)](#) के अनुसार, टड्डियाँ भोजन की तलाश हेतु शहरी क्षेत्रों में प्रवेश कर रहीं हैं।

टड्डि (Locusts):

- मुख्यतः टड्डि एक प्रकार के उष्णकटिबंधीय कीड़े होते हैं जिनके पास उड़ने की अतुलनीय क्षमता होती है जो विभिन्न प्रकार की फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं।
- टड्डियों की प्रजाति में रेगसिंतानी टड्डियाँ सबसे खतरनाक और विनाशकारी मानी जाती हैं।
- सामान्य तौर पर ये प्रतिदिन 150 किलोमीटर तक उड़ सकती हैं। साथ ही 40-80 मिलियन टड्डियाँ 1 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में समायोजित हो सकती हैं।

टड्डियों के पूर्वागमन के कारण:

- टड्डियों के पूर्वागमन का प्रमुख कारण मई और अक्टूबर 2018 में आए मेकुनु और लुबान नामक चक्रवाती तूफान हैं, जिनके कारण दक्षिणी अरब प्रायद्वीप के बड़े रेगसिंतानी इलाके झीलों में तब्दील हो गए थे। अतः इस घटना के कारण भारी मात्रा में टड्डियों का प्रजनन हुआ था।
- नवंबर 2019 में पूर्वी अफ्रीका में भारी मात्रा में फसलों को नुकसान पहुँचाया था साथ ही पूर्वी अफ्रीका में भारी वर्षा होने कारण इनकी जनसंख्या में वृद्धि हुई तत्पश्चात ये दक्षिणी ईरान और पाकसिंतान की तरफ चलती गईं।

टड्डियों का भारत में प्रभाव:

- वर्तमान में फसल के नुकसान होने की संभावना कम है क्योंकि किसानों ने अपनी रबी की फसल की कटाई पहले ही कर ली है। लेकिन महाराष्ट्र में

टडिडियों की बढ़ती जनसंख्या को लेकर नारंगी उत्पादक काफी चिन्ता है।

- टडिडी चेतावनी संगठन (Locust Warning Organization-LWO) के अनुसार, भारत में बड़ी समस्या तब होगी जब टडिडियों की प्रजनन संख्या में वृद्धि होगी।
- दरअसल एक मादा टडिडी 3 महीने के जीवन चक्र के दौरान 80-90 अंडे देती है। साथ ही इनके प्रजनन में बाधा उत्पन्न न होने की स्थिति में एक समूह प्रतिवर्ग किलोमीटर में 40-80 मिलियन टडिडियों की संख्या हो सकती है।

टडिडियों से बचाव हेतु किये गए प्रयास:

- टडिडियों से बचाव हेतु वृक्षों पर कीटनाशक दवाओं का छडिकाव किया जा रहा है।
- राजस्थान में 21,675 हेक्टेयर में कीटनाशक दवाओं का छडिकाव किया गया है।
- भारत द्वारा ब्रिटेन को 60 वशिष कीटनाशक स्प्रेयर (मशीन) का ऑर्डर दिया गया है।
- डरोन से भी कीटनाशक दवाओं का छडिकाव किया जा रहा है।

भारत में टडिडियाँ:

- भारत में टडिडियों की नमिन्खिति चार प्रजातियाँ पाई जाती हैं:- रेगिस्तानी टडिडी, प्रवासी टडिडी, बॉम्बे टडिडी, टरी टडिडी।
- आमतौर पर जुलाई-अक्टूबर के महीनों में इन्हें आसानी से देखा जा सकता है क्योंकि ये गर्मी और बारिश के मौसम में ही सक्रिय होती हैं।
- वर्ष 1993 में राजस्थान में टडिडियों ने सबसे ज्यादा फसलों को नुकसान पहुँचाया था।

टडिडी चेतावनी संगठन

(Locust Warning Organization-LWO):

- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (Ministry of Agriculture & Farmers Welfare) के वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय (Directorate of Plant Protection, Quarantine & Storage) के अधीन आने वाला टडिडी चेतावनी संगठन मुख्य रूप से रेगिस्तानी क्षेत्रों राजस्थान और गुजरात जैसे राज्यों में टडिडियों की निगरानी, सर्वेक्षण और नियंत्रण के लिये ज़िम्मेदार है।
- इसका मुख्यालय फरीदाबाद में स्थित है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस